लोक का सांवरा सेठ

कृष्ण के अनेक रूप बसे हैं जनमानस में, पर गुजरात-राजस्थान में उनका 'नरसी रो माहेरो का सांवरा सेठ' वाला रूप काफी लोकप्रिय है। लोक ने अपनी जरूरतों के हिसाब से अपने ही जैसा कृष्ण का वह रूप गढ़ा है, जो हर सुख-दुख में कंधे से कंधा मिलाकर उनके साथ खड़ा होता है। इसके पीछे की जनश्रुति का विश्लेषण कर रहे हैं लेखक

राजस्थान-गुजरात में प्रचलित 'नरसीजी रो माहेरो का सांवरा सेठ' लोक द्वारा अपने सपनों और कामनाओं के अनुसार गढ़ा गया भगवान कृष्ण का बहुत लोकप्रिय मनुष्य रूप है। कृष्ण के बालक, योद्धा, प्रेमी, परमेश्वर, मुक्तिदाता आदि कई रूप मिलते हैं, लेकिन उनके इस रूप से ग्रामीण जनसाधारण का अपनापा सबसे अधिक है। कृष्ण का यह रूप बहुत अद्भुत है– यह लोक द्वारा अपनी इच्छा और जरूरत के अनुसार अपने-जैसा मनुष्य भगवान गढ़ने और उसको बराबर मांजते रहने का जीवंत उदाहरण है।

माधव हाड़ा

यह रचना लोक में प्रचलित एक जनश्रुति का कथा विस्तार है। ऐसा प्रसिद्ध है कि भक्त नरसी मेहता की बेटी नानीबाई (कुंवरबाई) का माहेरा कृष्ण ने भरा। कथा के विस्तार में जाने से पहले 'माहेरा' क्या है? यह समझना जरूरी है। राजस्थान-गुजरात सहित उत्तर भारत के कुछ हिस्सों में माहेरा का चलन है। माहेरा विवाह के अवसर पर वधू की मां के पीहर से मामा-नाना द्वारा लाए जानेवाले वस्त्राभूषण आदि को कहते हैं। माहेरा के लिए मामेरु, मोसाल, मायरो आदि शब्द भी चलन में हैं। यह एक दायित्व है, जिसका पीहर पक्ष को अपनी सामर्थ्य के अनुसार निर्वाह करना होता है। ससुराल में बेटी का मान-सम्मान इस माहेरे पर निर्भर करता है।

कथा यह है कि–जूनागढ़ गुजरात के नरसी मेहता शिवभक्त थे। लक्ष्मी की उन पर कृपा थी। वे अरबपति थे। यह सब उनके परिवार में परंपरा से था। नरसी के पहले विवाह से एक पुत्र और एक पुत्री हुई। बत्तीस वर्ष की अवस्था में उनकी पत्नी का निधन हो गया। नरसी ने अपनी पुत्री का विवाह धूमधाम से अंजार में श्रीरंग के यहां किया। एक दिन उनके यहां साधुओं की मंडली आई। भजन-कीर्तन हुआ। नरसी ने चित्त देकर सुना, तो वैराग्य

की ऐसी लहर उठी कि उन्होंने तमाम धन-संपदा दान कर दी और भक्त हो गए।

नरसी की पुत्री नानीबाई की बेटी का विवाह तय हुआ। श्रीरंग ने बिरादरी के साथ समधी नरसी को भी निर्मंत्रित किया। नरसी साधु और निर्धन थे। वे मूंडे हुए सिर के साथ शंख बजाते हुए आएंगे और इससे परिवार की हंसी होगी, इसलिए षड्यंत्र किया गया कि वे आएं ही नहीं। नानीबाई की सास ने माहेरे में वांछित दुर्लभ और मूल्यवान वस्त्राभूषणों की सूची पत्र में लिखवाई। नानीबाई ने ब्राह्मण से कहा कि, 'पिता से कहना कि मायरे के बिना मत आना।' नरसी के घर पहुंचकर ब्राह्मण ने भोजन के लिए सामग्री मांगी, लेकिन निर्धन नरसी के घर में कुछ भी नहीं था। नरसी ने कृष्ण से प्रार्थना की कि, 'समधी के यहां से निमंत्रण आया है, दोहित्री का विवाह है, मुझे तो कोई नहीं जानता, लेकिन आपको सब जानते हैं, इसलिए अब चिंता आप ही को करनी है।'

नरसी ने मायरा ले जाने की तैयारी शुरू की। उसने लोगों से गाड़ी मांगी, तो उन्होंने कहा कि उसके पहिये और फाटक टूटे हुए हैं। उसे बैल मिले, तो वे बहुत बूढ़े और कमजोर थे। उसने लोगों से साथ चलने का निवेदन किया, तो लोगों ने कहा कि उनके घर में बहुत काम है। नरसी ने लंबी चोटी और तूंबी साथ रखनेवाले सिर मुंड़े हुए साथी साधुओं को एकत्र किया। उसने मायरे के लिए उपलब्ध तूंबियां, चंदन, टोपियां, मालाएं आदि साथ लीं और सबको गाड़ी में भरकर इनके बीच मदनगोपाल को बिठाया। नरसी ने जब प्रस्थान किया, तो परिजन उपहास करने लगे। मार्ग में हाथ में बसूला और कंधे पर करोत लेकर कृष्ण किसना खाती के रूप में प्रकट हुए। उन्होंने गाड़ी में सोना-चांदी जड़कर बैलों को युवा कर दिया। उन्होंने हाली बनकर गाड़ी के बैलों को हांका और सबको क्षणभर में अंजार पहुंचा दिया।

सूर्योदय के साथ ही बाजार खुले। श्रीरंग पूछने पर कि–'मायरे में क्या लाए हैं, और कौन साथ आया है?' तो उसने बताया कि–'नरसी अपने साथ तूंबे और मालाएं लाए हैं और उनके साथ साधु हैं।' उन्हें यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने नरसी को टूटी हुई झोंपड़ी में डेरा दिया। नानीबाई ने सुना, तो वह दौड़कर आई और अपने पिता से मिली। लौटकर जब वह

वह कोई अन्य कृष्ण है

हर पूर्णिमा की रात में वह सजने बैठती है।
कुंकुम, चंदन रचाती है शरीर में। हाथों, पांवों और गले में पहन लेती है फूलों के गहने। उसके बाद चुपके-चुपके चली जाती है यमुना के तीर पर।
उसने वचन दिया था कि वह आएगा, इसलिए राधा को तो प्रतीक्षा में रहना ही पड़ेगा।
उस समय लगता है, जैसे दूर कहीं बज उठती है, वही पागल बना देने वाली बांसुरी। वह सुर हवा में कांपता है, तमाल के पेड़ के पत्ते कांपते हैं। उसके कुछ समय बाद लगता है, वह दुरंत, दुर्दांत मेघवर्ण लड़का भागा-भागा आ रहा है जंगल-झाड़ पार करता हुआ। फिर वह राधा को बांहों में भर लेता है। यह राधा का बिल्कुल अपना जो कन्हैया है, यह उसे छोड़ कर रहेगा कैसे! मथुरा में जो राज कर रहा है। वह अन्य कृष्ण है।

– सुनील गंगोपाध्याय

अपने घर गई, तो सभी ने नरसी के साधुवेश और निर्धनता का उपहास किया। व्यथित होकर नानीबाई वापस पिता के पास गई। उसने उनसे कहा कि, 'आप मुझे लज्जित करने आए हैं। मेरी मां होती, तो एक-दो कपड़े तो जरूर लाती। नरसी ने कहा कि–'बेटी, घर जाओ, धैर्य धारण करो और पत्रिका लिखवाओ, सांवरा सेठ मायरा जरूर भरेगा।'

नानीबाई दौड़कर जेठ के पास आई और उससे कहा कि–'आपकी माहेरे में मेरे पिता से जो भी अपेक्षा है, उसकी पत्रिका लिख दो।' कुटुंब एकत्र हुआ और नानीबाई के देवर नारायण ने पत्र में मायरे के लिए वांछित वस्त्राभूषणों की सूची पत्रिका लिखी। पत्रिका नरसी के पास पहुंची, तो उसने देखा कि उसमें सबसे पहले 'ठाकुरजी' नाम है, तो उसने कहा कि–'माहेरा भी वही भरेंगे।' नरसी ने साधु-संतों के साथ श्रीरंग के भवन की ओर प्रस्थान किया। वृद्ध समधिन ने स्वागत का तिलक करके नेग मांगा, तो नरसी ने कहा कि–'देने-लेने के लिए मेरे पास तुलसीमाला ही है,' तो वह रूठ गई। उसने तिलक पोंछ दिया।

नरसी अपने साथी साधु-संतों के साथ बाजार में निकले। श्रीरंग ने संदेश भेजा कि–'निमंत्रित आ गए हैं, मायरा लेकर आओ।' सुनकर नरसी के पांवों के नीचे से जमीन खिसक गई। उन्होंने भगवान से निवेदन किया–'आप पर बड़ा भरोसा है। आपने बहुत विलंब कर दी। अब मेरी रक्षा कीजिए।' नरसी के करुणामय निवेदन से सोते हुए कृष्ण जग गए। कच्ची नींद में पड़े विघ्न से रुक्मिणी चिंतित हुई, तो भगवान ने कहा कि–'मेरे भक्त पर विपत्ति पड़ी है, मुझे इसी समय माहेरा ले जाना है।' रुक्मिणी ने कहा कि–'मुझे माहेरा का बड़ा उत्साह है, मैं भी साथ चलूंगी।' भगवान ने कहा कि–'तुम वहां बूढ़ी समधिन के पांव लगना, सभी को सम्मानसूचक-'जी', लगाकर संबोधित करना और नानीबाई की ननद से भयभीत रहना।' भगवान ने बाजार से वस्त्राभूषण खरीदे, सेठ का शृंगार किया और रथ पर सवार होकर जूनागढ़ के मार्ग पर निकले। अंजार पहुंचकर पनिहारिनों से नरसी डेरे के संबंध में पूछा, तो उन्होंने टूटी-फूटी झोंपड़ी की ओर संकेत किया। इधर श्रीरंग के घर में झगड़ा हो गया। देवर नारायण ने नानीबाई को उसके साधु और निर्धन पिता के संबंध में बहुत बुरा-भला कहा। वह पानी लेने के बहाने सरोवर आई और वहीं डूबने का विचार करने लगी। उसने विनय की कि–'हे भाई गिरधारी, तुम अब नहीं आए, तो फिर कब आओगे?' आम के पेड़ पर बैठे तोते से उसने पूछा कि–'देखो कि क्या कोई आता दिख रहा है।' तोते ने बताया कि–'पश्चिम दिशा में गुलाल उड़ रही है, रथ का कलश दिख रहा है और उस पर भगवान कृष्ण आरूढ़ हैं।' नानीबाई पाल से नीचे उतरकर सामने गई। कृष्ण ने अपना और रुक्मिणी का परिचय दिया। रुक्मिणी ने रथ से उतरकर नानीबाई को गले से लगाया।

नानीबाई पानी भरकर घर गई। उसने सास से कहा कि–'माहेरे का स्वागत करो।' किसी को विश्वास नहीं हुआ। स्त्रियां हंसने लगीं। कृष्ण नरसी के पास उनके डेरे पर गए। नरसी नाराज थे। कृष्ण नरसी को हंस-बोलकर मनाने लगे। नरसी ने कहा कि–'आप बहुत विलंब से आए हैं।' कृष्ण ने कहा कि–'चलो, अब माहेरा भरते हैं।' उन्होंने गठरी उठाई और श्रीरंग के भवन में आए। वहां बहुत भीड़ थी। सांवरा सेठ की ठाठ-बाट देखकर सब दंग रह गए। कृष्ण ने नानीबाई को बुलाकर पूछा कि–'मन की बात कहो।' नानीबाई ने सभी को वस्त्राभूषण दिलवाए। सभी प्रसन्न थे। अबीर और गुलाल उड़ रहा था। श्रीरंग की पत्नी ने सभी सखियों को एकत्र कर प्रथा के अनुसार समधी कृष्ण के लिए गालियां गाईं। अंजार नगर को नरसी की ओर से भोजन के लिए निमंत्रित किया गया। विदा के समय समधिन राधा-रुक्मिणी के गले लगी। कृष्ण ने रथ पर आरूढ़ होकर मोहरें उछालीं। उन्होंने हाथ जोड़कर श्रीरंग से विनती की कि–'हम आपके सेवक हैं।' श्रीरंग ने कहा कि–'आप अशरण के शरण और भक्तों के रक्षक हैं।'

माहेरे की कथा के कृष्ण 'संपूर्ण और अबाध' मनुष्य हैं। उनमें मनुष्य होने की निरंतर व्यग्रता है। वे दिव्य हैं, अंतर्ज्ञानी हैं, लेकिन नींद में चौंकते मनुष्य की तरह हैं। उन्हें भक्त की पीड़ा विचलित करती है, लेकिन वे इसमें अपने दिव्य होने को आगे नहीं करते। वे यहां अपनी मनुष्य लीला का विस्तार करते हैं। वह माहेरे के लिए सामग्री खरीदते हैं, वे सांवरा सेठ बनते हैं–पाग और बागा धारण करते हैं। यही नहीं, वे कान में सेठ की तरह हिसाब-किताब के लिए कलम भी लगाते हैं। वे माहेरे में जाने से पहले दुनियादार पति की तरह रुक्मिणी को हिदायत देते हैं कि तुम नानीबाई की सास के पांव पड़ना और वहां सबको सम्मानसूचक-'जी,' लगाकर संबोधित करना। वे जात-बिरादरी और समाज की ऊंच-नीच जानते हैं। वे संबंधों की सामाजिक बुनावट में गुंथे हुए संपूर्ण मनुष्य हैं। वे रुक्मिणी को नानीबाई की ननद से डरने के लिए कहते हैं। उन्हें पता है कि ननद की नाराजगी उनकी बहन नानीबाई के भावी जीवन में कलह का कारण बन सकती है। कथा का सबसे महत्त्वपूर्ण और अद्‌भुत अंश वह है, जहां कृष्ण अपने दिव्य को ताक में रखकर अच्छे समधी की तरह समधिन स्त्रियों की गालियां सुन रहे हैं, जिनमें स्त्रियां प्रथा के अनुसार उनके चरित्र और कुल आदि पर खराब टिप्पणियां कर रही हैं। विद्वान थोड़ी-सी छाछ और मक्खन के लिए गोपियों आगे नाचनेवाले कृष्ण पर तो बहुत मुग्ध हुए, लेकिन उन्हें नहीं पता कि समधिन स्त्रियों की गालियां खानेवाला एक दुनियादार कृष्ण भी हमारे लोक ने गढ़ रखा है।

> माहेरे की कथा के कृष्ण 'संपूर्ण और अबाध' मनुष्य हैं। वे दिव्य हैं, अंतर्ज्ञानी हैं, लेकिन नींद में चौंकते मनुष्य की तरह हैं।

कृष्ण परमब्रह्म हैं, तीनों लोकों के स्वामी हैं, देवाधिदेव हैं। उनके और कई रूप हैं–वे एक साथ योद्धा, प्रेमी, परमेश्वर, मुक्तिदाता आदि सब हैं। होंगे। लोक का इससे क्या बनता-बिगड़ता है? लोक का इनसे लेना-देना भी क्या है? लोक को तो चाहिए ऐसा कृष्ण, जो जात-बिरादरी और समाज में उसकी इज्जत रखे, वक्त-जरूरत कंधे-से-कंधा मिलाकर किसी सगे-संबंधी की तरह उसके साथ खड़ा रहे। नरसीजी रो माहेरो में सांवरा सेठ के रूप में लोक ने ऐसा ही भगवान अपने लिए गढ़ लिया है।

(लेखक जानेमाने साहित्यकार हैं)